सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-15 7 से 21 अगस्त, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

सर्वहारा के महान नेता फ्रेडरिक एंगेल्स जिन्दाबाद

28 नवम्बर 1820 – 5 अगस्त 1895

''मौजूदा सरकारों के राजनैतिक दमन का जीवन्त अनुभव, मजदूरों को वे चाहें या न चाहें, राजनीति से अपने को संलग्न करने के लिए मजबूर करता है। वह चाहे राजनैतिक उद्देश्यों के लिए हो या सामाजिक उद्देश्यों के लिए हो। इससे दूर रहने का उन्हें उपदेश देने का मतलब है, उन्हें बुर्जुआ राजनीति के चंगुल में धकेल देना।''

–फ्रेडरिक एंगेल्स

बिजली दर वृद्धि के केन्द्र सरकार के फैसले का एसयूसीआई(सी) द्वारा विरोध

योजना आयोग की घोर जन-विरोधी पूँजीपतिपरस्त सिफारिश को मान कर केन्द्र की कांग्रेस सरकार ने फरमान जारी किया है कि सभी राज्यों को बिजली दरें और भी बढ़ानी होंगी। इसके साथ ही एक शर्त जोड़ते हुए कहा गया है कि 'बीमार बिजली क्षेत्र' को बचाने के लिए केन्द्र सरकार का राहत पैकेज पाना है तो बिजली की दरें बढ़ानी होंगी और बिजली बोर्डों को आईन्दा सब्सिडी देना बन्द करना होगा। इस सिफारिश की कड़ी निन्दा करते हुए एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 19 जुलाई को जारी एक बयान में कहा है कि यह फैसला बेतहाशा महंगाई की मार झेल रहे गरीब किसानों सहित जनता पर एक जबरदस्त चोट है। बिजली क्षेत्र के घाटे की बात निरा झांसा है और उत्पादन खर्च में वृद्धि की बात भी कोरा बहाना मात्र है। जो सरकार कारपोरेट क्षेत्र को एक पर एक कन्सैशन, छूट, आर्थिक सहायता, करों में रियायत आदि दे रही है वही सरकार आर्थिक विकास को तेज करने के फरेब भरे बहाने से गरीबी की मारी जनता पर महंगाई का बोझ लाद कर उनका खून चूसती जा रही है।

सरकार के इस प्रस्ताव का देशी-विदेशी पूँजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने जिस तरह सादर स्वागत किया है, उससे समझा जा सकता है कि यह उन्हीं आर्थिक सुधारों की टोटकेबाजी है जो पूँजीवादी भूमण्डलीकरण के रास्ते पर चलते हुए जनजीवन में कहर बरपाने वाले और दुखी-पीड़ित लोगों की जिन्दगी को तबाही के कगार पर धकेल देने वाले आर्थिक सुधार हैं।

हम इसके खिलाफ अपने विरोध की आवाज बुलन्द करने और बिजली दर वृद्धि रद्द करवाने के लिए संगठित शक्तिशाली जनवादी आन्दोलन गठित करने के लिए जनता का आह्वान करते हैं। इसके साथ-ही-साथ बिजली बोर्डों को दी जाने वाली सब्सिडी में कटौती, बैंक सेवा व खुदरा कारोबार में विदेशी पूँजीनिवेश, पेन्शन फण्ड को शेयर बाजार के हवाले कर देने, तेल के दाम निर्धारण को सरकारी नियन्त्रण मुक्त कर देने आदि तथाकथित सुधारात्मक कदमों को रोकने के लिए जोरदार आन्दोलन गठित करने के लिए हम देशवासियों का आह्वान करते हैं।

असम में साम्प्रदायिकता की भड़की आग को बुझाने में नाकाम रहने के लिए कांग्रेस-नीत सरकार की एसयूसीआई(सी) ने कड़ी निन्दा की दोषियों को कड़ी सज़ा व पीड़ित परिवारों को मुआवजे की मांग की

असम में बोडोलैण्ड और इससे सटे हुए जिलों में भारी पैमाने पर भड़की साम्प्रदायिक आग पर गहरी चिन्ता जाहिर करते हुए एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 24 जुलाई को एक प्रैस बयान जारी किया। इसमें उन्होंने असम की कांग्रेस-नीत

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बिजली-पानी की बढ़ी दरों, पानी के निजीकरण व महंगाई के खिलाफ

दिल्ली में विरोध प्रदर्शन

शालीमार बाग: बिजली-पानी की दरों में की गई बढ़ोतरी, पानी के निजीकरण तथा बेतहाशा बढ़ती महंगाई के खिलाफ 25 जुलाई को एस.यू.सी.आई. (सी) की शालीमार बाग इकाई की ओर से विरोध मार्च निकाला गया। मार्च में शालीमार बाग के विभिन्न ब्लाकों से महिलाओं व नौजवानों ने हिस्सा लिया। प्रदर्शनकारियों ने 'बिजली-पानी की बढ़ाई दरें वापस लो', 'पानी का निजीकरण करना बंद करो', 'बेतहाशा बढ़ती महंगाई पर रोक लगाओ' आदि नारे लगाए। विरोध मार्च के दौरान कई स्थानों पर विरोध सभाएं भी की गई जिन्हें एसयूसीआई(सी) की शालीमार बाग इकाई की इंचार्ज नीतू खन्ना, सुमन चौहान, वृंदा दास, प्रोमिला, सुरेश तुफान, पीतमपुरा-शालीमार बाग इकाई की पार्टी इंचार्ज कॉ. प्रकाश देवी तथा एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य कमेटी सदस्यों कॉ. मैनेजर चौरसिया व कॉ. हरीश त्यागी ने सम्बोधित किया।

वक्ताओं ने कहा कि जब सरकार की गलत आर्थिक नीतियों के कारण तमाम आवश्यक वस्तुओं व खाद्यान्नों के दाम बढ़ते जा रहे हैं और लोग आर्थिक परेशानी से घिर रहे हैं, तब डीईआरसी ने निजी बिजली कम्पनियों के तर्कहीन प्रस्ताव पर सहमति देते हुए 26% तक बिजली दरों में वृद्धि को मंजूरी दे दी है। दिल्ली सरकार निजी बिजली कम्पनियों के हित में काम कर रही है जो पिछले 10 महीनों में बिजली बिलों को चार बार बढ़ा चुकी है। बिजली के बाद अब पानी के साथ भी यही होने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने पानी के निजीकरण का खुला ऐलान कर दिया है। जो निजी कम्पनियाँ पानी के व्यापार में आ रही हैं उनकी सलाह पर बिजली मीटरों की तरह पानी के मीटर बदलने का कार्य शुरू कर दिया गया है। पानी के 10,00,000 मीटर अमेरिका से मंगाये गये हैं जिनमें पानी न आने पर हवा आयेगी तो भी मीटर का बिल बढ़ जायेगा। पानी की दरें हर साल 10% खुद बढ़ जायेंगी। इसके अलावा भी वृद्धि की जा सकेगी। पानी की दरों में शीला सरकार अभी तक लगभग 6 गुना वृद्धि कर चुकी है। यह स्थिति आम गरीब आदमी के लिए जीते जी मार देने के समान है।

जिनके लिए हर रोज का भोजन जुटाना ही कठिन है उनके लिए बिजली-पानी की दरों में वृद्धि और महंगाई जानलेवा है। वक्ताओं ने लोगों से आह्वान किया कि सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ उठ खड़े हों। यदि हम सब एकजुट होकर विरोध करेंगे तो सरकार को जनविरोधी कदम वापस लेने को मजबूर कर सकते हैं। सभा का संचालन क्षेत्र की इंचार्ज कॉ. नीतु खन्ना ने किया।

दिलशाद गार्डन : पानी व बिजली के निजीकरण के विरुद्ध एसयूसीआई(सी) की उत्तर-पूर्वी दिल्ली इकाई की ओर से 26 जुलाई को उत्तर-पूर्वी जिला उपायुक्त कार्यालय के समक्ष जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। इसमें उत्तर-पूर्वी दिल्ली के अनेक क्षेत्रों से आम लोगों ने शिरकत की। यह विरोध प्रदर्शन सभा में तब्दील हो गया जिसका संचालन इकाई के संगठक कॉ. रामुद्गार ने किया। सभा को एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कम्युनिस्ट आचरण–विधि

–कॉ. शिवदास घोष

(गतांक से आगे)

यह बात स्पष्ट तौर पर समझ लेनी चाहिए कि क्रान्ति और क्रान्तिकारी सिद्धान्त को केन्द्र करके जो चर्चा–बहस हो उसमें व्यक्तिगत बैर–भाव के लिए कोई स्थान नहीं है। पार्टी के लिए जो अपनी जान तक दे सकते हैं वे पार्टी के खिलाफ शिकायती मनोभाव क्यों पलने देंगे? ऐसा हो सकता है कि कभी कोई कॉमरेड पार्टी के किसी मत से भिन्न मत रखता हो। अगर इस मतभेद का चरित्र मौलिक प्रकृति का है तो वह अलग पार्टी बनाए। तब उसका संघर्ष सीधा और उसका द्वन्द्व विरोधात्मक है। यहाँ पर गुटबाजी करने, 'कोटरी' बनाने का कोई सवाल ही नहीं है, यहाँ सीधा खुल्लम खुला संघर्ष है। ऐसी स्थिति में कानाफूसी करने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन मान लीजिए मामला ऐसा है कि वह पार्टी की मूल राजनीतिक लाइन से तो सहमत है और इसी पार्टी में रहने का उसका फैसला है लेकिन साथ ही कुछ दूसरे सवालों पर उसके मतभेद हैं तब उसे बातचीत के द्वारा उन मतभेदों का समाधान कर लेना चाहिए। इसके लिए गुटबाजी करके और एक के खिलाफ दूसरे में पूर्वाग्रह पैदा करके पार्टी का माहौल खराब करने की जरूरत नहीं है। यह सच है कि पार्टी में हम बहुत तरह की बातें सोचते हैं। ये सब सोच तो व्यक्तिगत सोच या सामूहिक दोनों ही होती हैं। लेकिन कॉमरेडों की जो बात हमेशा याद रखनी चाहिए वह यह है कि व्यक्तिगत सोच में हमेशा सामूहिक सोच का ही प्रतिफलन होना चाहिए। तब सभी मामलों में इस व्यक्तिगत सोच का ढंग क्या होना चाहिए? इसका ढंग यह होना चाहिए कि व्यक्तिगत सोच का पार्टी की सामूहिक सोच के साथ जो द्वन्द्व एवं संघर्ष है उसके सही समाधान करके हर मामले में सदा पार्टी की सामूहिक सोच को ही ग्रहण करना चाहिए। यह पार्टी के साथ किसी के एकात्म होने के संघर्ष की प्राथमिक शर्त है।

इस संघर्ष में जो अपने को जोड़ नहीं सके उन्हें यह कभी समझ में नहीं आएगा कि क्यों एक कॉमरेड को कभी–कभी दूसरे कॉमरेड की चाल टेढ़ी लगती है या एक दूसरे को पसन्द क्यों नही करते हैं। दरअसल विभिन्न मामलों में अगर व्यक्तिगत पहलू व आत्मकेन्द्रित रुख न रहता तो इतना झमेला नहीं होता–मान लीजिए एक कॉमरेड किसी नेता के बारे में खुद ही मन में यह धारणा बना ले कि वे किसी मामले में अति कर रहे हैं और वह यह सोच ले कि यह ठीक नहीं है। लेकिन इसे पार्टी के सामने लाने की बजाय वह अपने खुद के मन में ही उसे पनपने देता रहे यानी वह खुद सोचने लगे कि किसी मामले में कुछ नेताओं की कुछ राय है और दूसरों की कुछ और है जबकि वह स्वयं अपने मन में कुछ और ही राय रखता है। सोचिए कि इन सब का आखिर नतीजा क्या निकलेगा? तब विभिन्न नेता और कार्यकर्ता पार्टी में विभिन्न व्यक्तियों के बारे में अपनी–अपनी निजी राय लेकर चलते रहेंगे। पार्टी में ऐसी बात अगर होने लगे तो यह न केवल सामूहिक सोच–समझ में एकरूपता व दृष्टिकोण में अभिन्नता के बनने के संघर्ष में जबरदस्त बाधा पैदा कर देगी, बल्कि उस कॉमरेड के व्यक्तिगत विकास को भी अवरुद्ध कर देगी।

लेकिन पार्टी में ये सब बातें अक्सर घटती रहती हैं। यहाँ तक कि कई अच्छे–अच्छे कॉमरेड भी इसके शिकार हो जाते हैं। अपने देश के अधिकांश तथाकथित मार्क्सवादी नेताओं को मैं देखता हूँ कि वे मानव मनोविज्ञान को लेकर ज्यादा माथापच्ची नहीं करते हैं। लेकिन मुझे इसका अध्ययन करने का कुछ मौका मिला है। इसलिए बहुत–सी बातें मुझे नजर आयी हैं। किन्तु इसे केवल मेरी व्यक्तिगत पहलकदमी पर ही नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि यह मामला कोई व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सबसे संबंधित सामूहिक हैं। इसलिए पार्टी–गत आन्दोलन का माहौल को ही बदलना होगा। एक व्यक्ति विशेष की समस्या पर चर्चा को भी एक निर्वैयक्तिक (इम्पर्सनल) ढंग से करना जरूरी है।

कॉमरेडों को सदा याद रखना होगा कि छोटे–छोटे मामलों पर भी मतभेद अगर समय पर दूर न किए जाएं और नगण्य समझ कर हल न किए जाएं तो वे एक दिन राजनीतिक क्षेत्र में भी व्यापक मतभेदों का रूप ले सकते हैं। इसलिए किसी बिन्दु को चाहे वह कितना भी महत्वहीन क्यों न दिखाई पड़े उसे छोटा समझकर अनदेखा नहीं करना चाहिए। कभी–कभी कुछ कॉमरेड मान लेते हैं कि किसी मामले में उनका भिन्न मत है लेकिन वे इसे इतना मामूली समझते हैं कि मानो वह मुद्दा उठाने लायक ही नहीं है। अत: वे इस मतभेद को विचार–विमर्श के द्वारा दूर करना जरूरी नहीं मानते हैं। पूछने पर कहेंगे कि यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। जब बड़ी–बड़ी बातों में एकता है तो इस छोटी–सी बात को लेकर चिन्ता करने की क्या बात है। लेकिन अगर वह सवाल वास्तव में इतना ही महत्वहीन है तो वह उनके मन में इतनी उथल–पुथल क्यों मचाए हुए है? उन्हें इस छोटी–सी बात ने इतना दुखी या परेशान कैसे कर डाला है? मुँह से कुछ भी कहे वह मामला उनके लिए दरअसल इतना तुच्छ नहीं होता है।

इस प्रसंग में एक बात और भी गौरतलब है। किसी कार्यकर्ता के द्वारा अपने मतभेद के मुद्दे या उसकी व्यक्तिगत धारणा को, चाहे वह कितनी भी तुच्छ क्यों न हो, अगर पार्टी के अन्दर चर्चा में न लाया जाए, विचार–विमर्श से उसे हल न किया जाए और साफ न किया जाए तो वह उसकी चिन्तन प्रक्रिया और राजनीतिक चिन्तन–भावना को चाहे कितने ही सूक्ष्म रूप से क्यों न हो, अवश्य प्रभावित करेगी। इन सब मनोभावनाओं के फलस्वरूप कई अच्छे–अच्छे कॉमरेडों के विकास को भी बहुत हानि पहुँचती है और एक दिन उनकी जो भी राजनीतिक योग्यता–क्षमता थी वह भी नष्ट हो जाती है। यह ठीक है कि पार्टी की मूल राजनीतिक लाइन जब तक ठीक है तब तक वह निश्चय ही आगे बढ़ेगी और पार्टी में अच्छे कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ेगी और वे विकसित होंगे। किन्तु कॉमरेडों के अन्दर विकास की जो सम्भावनाएं रहती हैं उन सब योग्यता–क्षमताओं का ऐसी मनोभावनाओं के रहने से पूरा–पूरा सदुपयोग नहीं होगा।

इस सम्बन्ध में आपको मैं एक और बात बताना चाहूँगा। मनुष्य का मन बहुत–कुछ दर्पण की तरह है। अगर दर्पण साफ और चमकदार न रखा जाए तो जिस तरह उसमें आप चेहरे की तस्वीर साफ नहीं देख सकते, उसी तरह व्यक्तिगत समस्या या किसी कॉमरेड के बारे में किसी भावना या विक्षोभ को लेकर हो अथवा पार्टी की किसी सैद्धान्तिक या सांगठनिक समस्या को लेकर हो (उसमें ठीक और गलत क्या है यह अगल बात है–यह तो वैज्ञानिक और आलोचनात्मक परीक्षण के बाद ही तय होगा) अगर किसी का मन उदास या दुखी हो जाए तो विभिन्न कॉमरेडों की जीवन शैलियों, आन्दोलनों और घटनाओं में अर्थात पार्टी में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में उसका सही विचार नहीं बन सकता; उसके मन में उसकी सही तस्वीर नहीं बन सकती। तब वह वास्तविकता की झूठी तस्वीर ही देख पाएगा क्योंकि उसका मन धुँधले दर्पण की तरह धुँधला है। मन अगर पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं है तो यह कभी वस्तुगत सच्चाई को सही–सही प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता। देखने की क्षमता रहने से भी अगर किसी का मन साफ नहीं है तो वह अपने चारों ओर अच्छी और उपयोगी चीजें प्रचुर मात्रा में होने पर भी उन्हें देख नहीं पाएगा। तब इससे तो उसी की हानि होगी क्योंकि प्रतिभा, बुद्धि और परखने की क्षमता होने के बावजूद भी वह इसमें सच्चाई को देख पाने में असफल रहा। इसलिए मैं कहता हूँ कि मन को खामखा बोझिल व अस्वस्थ न होने दें। मन के मलिन होने से वह किसी वस्तुगत सच्चाई को यथार्थ रूप में नहीं देख सकता।

इसलिए आपको जो भी कहना हो–भले ही वह कितना ही मामूली क्यों न हो–उसे चर्चा में लाकर और हल करके अपने मन को उस बोझ से मुक्त करना होगा। केवल इसी ढंग से आप वस्तुगत जगत और वास्तविकता की सही तस्वीर देख सकेंगे। फिर भी भूल हो सकती है क्योंकि यह ज्ञान, अनुभव और समझने की क्षमता पर निर्भर करता है। आपको अवश्य ही नोट करना चाहिए कि सिर्फ सैद्धान्तिक कसरत आपके मन को मुक्त नहीं रख सकती। मन को साफ व मुक्त रखने के लिए ज्ञान–चर्चा द्वारा सैद्धान्तिक समझ हासिल करने के साथ–साथ जीवन के हर क्षेत्र को लेकर क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रयोग करते हुए एक सर्वांगीण संघर्ष चलाने और पार्टी के नेतृत्व में जन–संघर्षों को संगठित करने का अथक प्रयास करना जरूरी है।

जो कॉमरेड अपनी खुद की कमियों को दूर करने के लिए अपने–आपको पार्टी के इस सर्वांगीण संघर्ष से नहीं जोड़ते वे अपनी कमियों से मुक्त नहीं हो सकते भले ही पार्टी उन्हें अपने हाथों से तैयार करने और मदद करने की हर सम्भव कोशिश क्यों न करे। इसके फलस्वरूप अपनी इस आदत के कारण वे कभी पार्टी जीवन के अभिन्न अंग नहीं बन सकते। वे पार्टी की सांगठनिक सजीव प्रक्रिया (ऑर्गेनिज़्म) में शामिल नहीं हो सकते चाहे नेतृत्व इसके लिए कितनी भी कोशिश क्यों न करे। इस तरह अगर उनके अन्दर अगुआ संगठक बनने लायक सम्भावना है तो भी वे खुद ही उसमें अड़चन डाल देते हैं और लगातार इस या उस बात को लेकर वे हरेक में दोष ढूँढ़ते रहते हैं। अनेक अच्छे कॉमरेडों के साथ ऐसा हो जाता है कि पार्टी किसी कॉमरेड की केवल सैद्धान्तिक प्रखरता या उसकी भाषण देने की क्षमता से ही सन्तुष्ट नहीं हो सकती। पार्टी को एक और पहलू पर विचार करना होगा। वह पहलू यह है कि कॉमरेडों का पार्टी की सजीव प्रक्रिया के साथ जुड़ना। पार्टी को देखना है कि किसी कॉमरेड की पार्टी के साथ एकात्मता की मात्रा कितनी है और उसकी वर्ग–चेतना के पक्ष का पहलू कितना प्रबल है।

इसके बावजूद भी बहुत–सी मुश्किलें हो सकती है। आज जिसमें वर्ग–हित के साथ एकात्मता काफी गहरी है और पार्टी के लिए भावनाएं भी बुलन्द हैं वह भी कभी आश्चर्यजनक ढंग से बदल सकता है। इसलिए यह समझ लेना चाहिए कि इस संघर्ष में किसी नेता या कार्यकर्ता की पार्टी और क्रान्ति के साथ एकात्म होने की कोई परीक्षा अन्तिम नहीं है। इस संघर्ष को लगातार सही ढंग से नहीं चला पाने से कॉमरेडों में आत्म–सन्तोष व घमण्ड पैदा हो जाता है और उन्हें भ्रष्ट कर डालता है। इस तरह चलते रहने से फिर एक दिन ऐसा पाएंगे कि वे क्रान्ति और पार्टी के भी विरोधी बन गए हैं। इस तरह वे अपना भी नुकसान करते हैं और पार्टी का भी।

इस प्रसंग में जिम्मेदार संगठकों एवं नेताओं के बारे में भी कुछ कहने की जरूरत है। क्रान्तिकारी आन्दोलन में, संगठन बनाने के दौरान और पार्टी कार्यक्रम व पार्टी की नीतियों को लागू करते समय जिम्मेदार नेता व संगठक भी कभी–कभी गलती कर सकते हैं। ऐसा बिल्कुल सम्भव है और स्वाभाविक है। याद रखें कि ये

(शेष पृष्ठ 4 पर)

जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

मुरादाबाद: एआईडीवाईओ के पूर्व घोषित प्रदेशव्यापी आन्दोलन के क्रम में मण्डलायुक्त कार्यालय पर जोरदार धरने प्रदर्शन के माध्यम से उ.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन मण्डलायुक्त मुरादाबाद के मार्फत सौंपा गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व संगठन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह ने किया। धरने में सैकड़ों महिला-पुरुष शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने अपनी माँगों के समर्थन में तख्तियाँ लिखी हुई थीं तथा वे जोरदार नारेबाजी कर रहे थे।

इस अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने प्रदेश में बढ़ती महँगाई, बेरोजगार, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शिक्षा व चिकित्सा के व्यापारीकरण, महिलाओं व बच्चों पर बढ़ते अपराधों पर गहरा रोष प्रकट करते हुए सरकार से अविलम्ब नई युवा नीति बनाने का आग्रह किया। वक्ताओं ने सभी युवाओं को रोजगार देने, रोजगार न देने तक जीने लायक बेरोजगारी भत्ता देने, महँगाई पर रोक लगाने, सभी गरीबों को बीपीएल कार्ड देने, सभी को नि:शुल्क शिक्षा व चिकित्सा उपलब्ध कराने, शराब, गुटखा-पान मसाला के सेवन, उत्पादन तथा व्यापार पर रोक लगाने की मांग की। वक्ताओं ने किसानों तथा पीतल उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की स्थिति पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए पूरे मुरादाबाद मण्डल को सूखाग्रस्त घोषित कर किसानों के नुकसान की भरपाई करने, पीतल उद्योग में कार्यरत कारीगरों-श्रमिकों के सरकारी कर्जे माफ करने की माँग की। सूखे को देखते हुए 24 घण्टे बिजली सप्लाई की भी माँग की गई। वक्ताओं ने महिलाओं व बच्चों पर बढ़ते अपराधों विशेष रूप से पुलिस थानों में भी महिलाओं के सुरक्षित न होने का मुद्दा उठाया। वक्ताओं ने कहा कि यदि माँगों का निराकरण करने के लिए सरकार द्वारा तत्काल कदम नहीं उठाए गए तब आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए 14 सितम्बर 2012 को लखनऊ विधान सभा पर विशाल प्रदर्शन किया जाएगा।

इस धरने-प्रदर्शन के माध्यम से तीन प्रस्ताव भी मण्डलायुक्त को सौंपे गए। नवसृजित भीमनगर जनपद की नेकपुर न्याय पंचायत को ज्योतिबा फूले नगर में शामिल करने, मुरादाबाद मण्डल को सूखाग्रस्त घोषित करने, शराब, गुटखा पान-मसाला पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की माँ को लेकर ये तीन प्रस्ताव पास किये गये। ये प्रस्ताव क्रमश: मेहनतकश जन संघर्ष समिति के संयोजक मण्डल सदस्य राजेन्द्र सिंह एडवोकट, समिति के ही गम्भीर सिंह और ऑल इण्डिया एमएसएस की भीम नगर प्रभारी सोमवती शर्मा की तरफ से पेश किये गये थे।

धरने-प्रदर्शन को हरकिशोर सिंह, मौ. गौरी, नौबर सिंह, नासिर हुसैन, जगदीश सिंह, कमलेश चहल, संध्या त्यागी, रेखा सिंह, सुनीता, देवराज सिंह, सिद्धराज सिंह, धर्मपाल सिंह, राजेन्द्र सिंह, गम्भीर सिंह, सोमवती, विनोद विग, प्रदीप, इस्लाम अली, मौ. यामीन, रूबी अफजल, एसयूसीआई(सी) के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. सपन चटर्जी, राकेश, हुकुम सिंह, नितिन सिंह, एसयूसीआई(सी) के जे.पी. नगर जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार ने सम्बोधित किया।

पेट्रो पदार्थों की मूल्य वृद्धि के खिलाफ विरोध मार्च

पटना : पटना में राज्य सरकार द्वारा अधिभार बढ़ाये जाने की वजह से पेट्रोल की कीमत में 1 रुपया, डीजल में 1.70 रुपये, किरासन तेल में 0.80 रुपये प्रति लीटर और रसोई गैस में प्रति सिलिंडर 9.50 रुपये की हुई वृद्धि के खिलाफ 27 जुलाई को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पटना जिला कमिटी के तत्वावधान में भगत सिंह चौक से विरोध मार्च निकाला गया। विरोध मार्च में शामिल लोग रसोई गैस, किरासन, पेट्रोल, डीजल की मूल्य वृद्धि वापस लेने तथा राज्य सरकार के अधिभार घटाने संबंधी नारे लगा रहे थे। जे पी गोलम्बर पर विरोध मार्च सभा में तब्दील हो गया।

सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने राज्य सरकार

द्वारा अधिभार बढ़ाये जाने की वजह से रसोई गैस, किरासन, पेट्रोल तथा डीजल के मूल्य में हुई वृद्धि की कड़ी भर्त्सना की। कुछ ही दिनों पहले केन्द्र सरकार द्वारा पेट्रोल की कीमतों में की गयी बढ़ोतरी का मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विरोध किया था और राष्ट्रव्यापी भारत बंद के आह्वान में शामिल थे, लेकिन उन्होंने खुद ही बिहार में राज्य अधिभार बढ़ाकर पेट्रोलियम पदार्थों को और महंगा कर दिया है। इससे महंगाई की मार झेल रही बिहार की गरीब जनता की बदहाली और बढ़ेगी। वक्ताओं ने राज्य सरकार से राज्य अधिभार को पूरी तरह समाप्त करने की मांग की है ताकि बिहार में पेट्रोलियम पदार्थ सस्ता मिल सके। सभा को एसयूसीआई (सी) राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. शिवलाल प्रसाद, मणिकांत पाठक, जिला कमिटी सदस्य बैद्यनाथ शर्मा, सूर्यकर जितेन्द्र, राजकुमार चौधरी, अनिल कुमार, अनामिका आदि ने संबोधित किया। सभी वक्ताओं ने राज्य की जनता से पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्यों में मनमानी तरीके से की गयी वृद्धि के खिलाफ जन आंदोलन तेज करने का आह्वान किया।

बिजली-पानी की बढ़ी दरों...

(पृष्ठ 2 का शेष)

सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. हरीश त्यागी, दिलशाद इकाई के इंचार्ज कॉ. आर.के. भट्ट, सीमापुरी इकाई के इंचार्ज कॉमरेड मो. आसिफ ने सम्बोधित किया। कॉमरेड आर.के. भट्ट के नेतृत्व में कॉ. सीता सिंह एवं कॉ. मो. आसिफ ने जिला उपायुक्त के माध्यम से दिल्ली की मुख्यमंत्री के नाम 4 सूत्री मांगों सहित एक ज्ञापन सौंपा। जिला उपायुक्त ने जनता की आवाज़ को सरकार तक पहुँचाने का आश्वासन दिया।

शास्त्री नगर-गुलाबी बाग : पानी के निजीकरण व पानी के बढ़ाए गए दामों के खिलाफ एस.यू.सीआई. (कम्युनिस्ट) की शास्त्री नगर-गुलाबी बाग इकाई के तत्वावधान में 29 जुलाई को एक रैली आयोजित की गयी। रैली का आयोजन शास्त्री नगर मेट्रो स्टेशन से ई-ब्लॉक व बी-ब्लॉक मार्केट होते हुए शास्त्री बुत तक किया गया जहाँ प्रदर्शन एक जनसभा में तब्दील हो गइ। सभा को एस.यू.सीआई. (सी) के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. प्राण शर्मा व कॉ. के.सी.तिवारी के साथ ही पार्टी की लोकल यूनिट इंचार्ज कॉ. ऋतु कौशिक, पानी निजीकरण-व्यापारीकरण प्रतिरोध कमेटी की शास्त्रीनगर-गुलाबी बाग-प्रताप नगर की अध्यक्ष श्रीमती जसबीर कौर, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री मणिराम शर्मा, एआईएमएसएस से कॉ. आशा रानी, एआईडीवाईओ से कॉ. अमरजीत कुमार व एआईडीएसओ से मौसम कुमारी ने वक्तव्य रखा। सभा का संचालन पार्टी के लोकल यूनिट के सदस्य प्रशान्त कुमार ने किया।

वक्ताओं ने कहा कि बिजली के निजीकरण के सुनहरे परिणाम दिखाने वाली दिल्ली सरकार के सारे वायदे खोखले साबित हो रहे हैं। 1जुलाई से डी.ई.आर.सी. की अनुमति से बिजली कंपनियों ने घरेलू उपभोक्ताओं के लिए बिजली दरों में 26% की बढ़ोतरी की है। इसके पहले भी पिछले अगस्त में बिजली कंपनियों ने लगभग 22% की बढ़ोतरी की थी। यही हाल पानी का भी होने वाला है। यह कदम सरकार के निजी कम्पनियों के प्रति वफादारी को ही साबित करता है। ऐसे समय में जब दुनिया आर्थिक मंदी से गुजर रही है, पूंजीपति निवेश के लिए उन क्षेत्रों को अपना रहे हैं जहां मांग अबाध रूप से जारी रहेगी इसलिए सरकार सब कुछ को व्यापार के लिए खोल देना चाहती है। शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा प्राइवेट के हवाले कर दी गई है। बिजली के बाद अब पानी को भी मुनाफाखोरों को अपनी तिजोरियाँ भरने के लिए दिया जा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि दुनिया के जिन-जिन देशों में पानी का निजीकरण हुआ है वहाँ के लोगों को इसके बेहद कड़वे अनुभव हुए हैं। लोग सड़कों पर उतर आये और सरकारों को निर्णय वापस लेने को मजबूर किया। वक्ताओं ने यह भी कहा कि आज कुछ संसदीय पार्टियाँ भी पानी के निजीकरण के खिलाफ नारे उठा रही हैं लेकिन यह सब केवल चुनाव के मद्देनजर है। दरअसल पूंजीपतियों की सेवा करने में ये पार्टियाँ भी सत्ताधारी पार्टियों से कम नहीं हैं। इसलिए जनता इस बहकावे में न आकर जनआंदोलन को मजबूत बनाने की भरपूर कोशिश करें।

वक्ताओं ने आम लोगों से यह आह्वान किया कि हर उस इंसान को जो पानी का मूल्य समझता है और जनवादी अधिकारों की रक्षा करना चाहता है उनसे पानी के निजीकरण-व्यापारीकरण के दिल्ली सरकार के निर्णय के खिलाफ उठ खड़ा होना होगा और सरकार को अपना फैसला बदलने के लिए बाध्य करना पड़ेगा।

आचरण विधि..

(पृष्ठ 2 का शेष)

गलतियाँ पार्टी की एकता को कमजोर नहीं कर सकती बशर्ते कि गलतियों को ठीक समय पर उचित ढंग से पहचान लिया जाए और उन्हें सुधार लिया जाए। लेकिन क्रान्तिकारी आन्दोलन के पथभ्रष्ट होने की सम्भावना उन नेताओं से ज्यादा रहती है जो संसदीय राजनीति के मंच या किसी दूसरे तरीकों व गलत प्रक्रिया से एकदम मशहूर हो जाने के फितूर में एक तरफ तो और भी ज्यादा सस्ती लोकप्रियता के लिए लालायित रहते हैं और तथाकथित 'लोकप्रिय' हावभाव या ऐसी आन्दोलन-शैली की तरफ ज्यादा से ज्यादा झुकते जाते हैं जिसका कम्युनिस्ट आचार-संहिता से कोई मेल नहीं है और दूसरी तरफ पार्टी से एकात्म होने के संघर्ष की मुख्य धारा से दूर हटते जाते हैं। जैसा कि मैने पहले ही कहा है कि किसी नेता या कार्यकर्ता की कोई भी परीक्षा अन्तिम नहीं होती। अगर संघर्ष ठीक तरह से न चलाया जाए, अगर नेता आत्म-सन्तोष का शिकार हो जाए तो उसका भी पतन होने लगता है। क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं और नेताओं को यह हरदम ख्याल रखना चाहिए कि वे हर तरह के सामजिक अन्याय और दमन के खिलाफ जन-संघर्षों को संगठित करने के लिए जनता के साथ निरन्तर घुलने-मिलने में सदा कम्युनिस्ट नैतिकता के मानदण्ड को बुलन्द रखेंगे और सर्वहारा रुचि-संस्कृति, न्याय-नीति से परिचालित होंगे और कभी एक पल के लिए भी सहज चुटकी में ही लोकप्रिय होने की झोंक का शिकार नहीं होंगे। यानी बुर्जुआ या पेटि-बुर्जुआ 'लोकप्रिय' हाव-भाव, आचार-आचरण या चाल-ढाल के शिकार नहीं होंगे। याद रखें, अक्सर यह होता है कि क्रान्तिकारी लोग जनता को एकजुट और संगठित करने के लिए जब उनके बीच जाते और घूमते-फिरते हैं तो उनके उन्नत रुचिगत, नैतिक और सांस्कृतिक आचरण के द्वारा जनता में क्रान्तिकारी सिद्धान्त-तत्वों की समझ बहुत स्पष्ट तौर पर प्रकट होती है और यही फिर जनता के सांस्कृतिक व रुचिगत स्तर को भी ऊँचा उठाती है। इसके साथ-साथ ही याद रखें, क्रान्तिकारी कार्यकर्ता का आचरण, उसका उदाहरण जनता को जैसे क्रान्तिकारी चेतना, रुचि, संस्कृति व मानसिकता से उद्‌बुद्ध करता है उसी तरह क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं को भी जनता से सीखने की बहुत-सी बातें होती हैं। लेकिन जनता से केवल वे ही क्रान्तिकारी सीख सकते हैं जो क्रान्तिकारी कायदे व भावना से जनता के साथ घुलमिल सकते हैं वरना वे निकृष्ट बुर्जुआ और पेटि-बुर्जुआ 'लोकप्रिय' हावभाव एवं चालढाल के शिकार हो जाते हैं; तुरन्त 'लोकप्रिय' होन की झोंक से जनता में जाने से मौजूदा समाज-व्यवस्था के स्वाभाविक नियम से जनता में जो निम्न रुचिबोध व सांस्कृतिक स्तर मौजूद होता है वे उसी के पोषक-धारक का काम करने लगते हैं। इस तरह क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं और नेताओं की भी रुचि-संस्कृति का मानदण्ड नीचे गिरता जाता है।

क्रान्तिकारी चाल-ढाल यानी जनता के साथ घुलने-मिलने की क्रान्तिकारी शैली को अपनाने की मुख्य शर्त है : बुर्जुआ की तथाकथित 'लोकप्रिय' चाल-ढाल और आचार-आचरण द्वारा सस्ती लोकप्रियता हासिल करने की लालसा रखने की प्रक्रिया के चरित्र से क्रान्तिकारियों द्वारा क्रान्तिकारी संघर्षों चलाने के जरिये लोकप्रिय होने की प्रक्रिया का चरित्र पूर्णत: भिन्न है। उसे समझ कर क्रान्तिकारी सिद्धान्त-तत्वों की लगातार साधना (कॉन्सटैण्ट प्रैक्टिस) और जीवन में प्रयोग-व्यवहार के द्वारा क्रान्तिकारी लोकप्रियता हासिल करनी होगी। अगर मुँह से क्रान्तिकारी सिद्धान्त और क्रान्तिकारी विचारधारा की बात करें और आचरण बुर्जुआ जैसा करें तो फिर 'क्रान्तिकारी' शब्द केवल थोथी नारेबाजी बनकर रह जाएगा। जो नेता और कार्यकर्ता ऐसे लक्षण प्रदर्शित कर रहे हैं, हालांकि ये संख्या में थोड़े ही हैं, फिर भी उन्हें इस ओर से सतर्क रहना चाहिए।

कभी-कभी यह देखने में आता है कि कुछ जिम्मेदार नेता और पुराने कॉमरेड तक भी पार्टी के अन्य साधारण कॉमरेडों के साथ मेलजोल (एसोसिएशन) नहीं कर पाते हैं। जब कोई कॉमरेड उनके पास जाता है तो वे या तो कोई किताब उठा लेते हैं या अखबार पढ़ने लगते हैं या किसी अन्य काम में व्यस्त होने का दिखावा करते हैं। यानी दूसरे कॉमरेडों के सामने हमेशा अपने आपको व्यस्त दिखाने की झोंक उनमें दिखाई देती है। लेकिन जो पार्टी कॉमरेड नहीं—ऐसे सब दोस्तों या नाते-रिश्तेदारों से घण्टों तक फिजूल की गपशप करते मिलते हैं। इस तरह की गपशप साफ तौर पर अराजनीतिक और निरुद्देश्य किस्म की होती है और नतीजे के तौर पर उन सगे-सम्बन्धियों और दोस्तों को क्रान्तिकारी आन्दोलन की तरफ खींचना तो दूर रहा, उल्टे अनजाने में वे कॉमरेड खुद ही उन गैर-पार्टी लोगों की निम्न संस्कृति के प्रभाव का शिकार हो जाते हैं। पार्टी के साथियों से जो अपना मेल-मिलाप नहीं कर पाते या उनसे सांस्कृतिक एवं भावनात्मक आदान-प्रदान नहीं कर पाते वे क्या करते हैं? स्वाभाविक है कि वे पार्टी के बाहर के लोगों के संसर्ग में आकर उन्हें बदलने की बजाय अपनी सांस्कृतिक एवं नैतिक मानसिक खुराक, या चाहे उसे आप जो भी नाम दें, पार्टी के बाहर के इन हमजोलियों से घटिया रुचिगत मसाला जुटाते रहते हैं। फलस्वरूप उनका क्रान्तिकारी सांस्कृतिक स्तर धीरे-धीरे नीचे गिरने लगता है।

एक और बात ध्यान में रखने की है। अक्सर पार्टी के अन्दर कार्यकर्ताओं के बीच आपसी चर्चाओं, आलोचनाओं के दौरान एक-दूसरे की गलतियाँ निकालने यानी छिद्रान्वेषण करने का रुझान और उनको लेकर अनावश्यक आलोचना करने की प्रवृत्ति देखी गई है। चर्चा-बहस, आलोचना का यह ढंग कम्युनिस्ट आचरण विधि के अनुरूप कतई नहीं है। दूसरे व्यक्ति के गुण-दोषों को लेकर उसका मूल्यांकन करते समय कम्युनिस्ट अपने खुद के दोषों व अवगुणों से अपनी आँख नहीं मूंद सकते और न ही दूसरे के गुणों को मान्यता देने से इन्कार करने की गलती कर सकते हैं। हम कम्युनिस्ट जानते हैं कि हर आदमी में गुण-दोष होते हैं। ऐसा कोई इन्सान नहीं है जो केवल गुणों से ही भरा पड़ा हो और उसमें कोई अवगुण या दोष न हो। जिस तरह ऐसा कोई महान आदमी नहीं हो सकता जिसमें केवल गुण ही गुण भरे पड़े हों और कोई सीमाबद्धता या दोष न हो, उसी तरह ऐसा भी कोई आदमी नहीं हो सकता जो बुरा ही बुरा हो और उसमें कोई भी गुण न हो। हर व्यक्ति में कमोबेश दोष व गुण, दोनों ही होते हैं। इसलिए किसी के दोष या कमियों को छुड़ाना हो और उसके गुणों को विकसित करना हो तो लगातार उसके दोषों को कुरेदना नहीं बल्कि उसके जितने गुण हैं या सकारात्मक पहलू हैं उन्हें प्रोत्साहन देना ही कम्युनिस्ट तरीका है। इस प्रकार उसके गुणों को प्रोत्साहन देते रहने से उसके गुण ज्यादा से ज्यादा बढ़ते जाने से ही उसके दोष भी दूर हो सकते हैं।

लेकिन कॉमरेड आम तौर पर आलोचना करते समय इस बात का ख्याल नहीं रखते हैं। वरना वे समझ पाते कि यहाँ तक कि जो कॉमरेड सबसे ज्यादा अधम है यानी जिसकी रुचि-संस्कृति का स्तर बहुत नीचा है, जो हीन मनोवृत्ति वाला आदमी (स्नीकी) है वह भी कभी-कभी ऐसा गुण प्रदर्शित करता है जो बेजोड़ होता है और उसे आम आदमी से निराला व बड़ा बना देता है। चरित्र के इस निम्न स्तर के बावजूद वह देश, क्रान्ति और मजदूर वर्ग के लिए लड़ना चाहता है जो उसे यहाँ ले आई है। उसके चरित्र के इस पहलू को हम छोटा करके नहीं देख सकते हैं। आलोचना करते समय कार्यकर्ता और नेता इस बात को अवश्य याद रखें कि पार्टी में, खासकर हमारी जैसी पार्टी में जो भी आया है, वह यकीनन आम आदमी से एक कदम आगे है और ठीक इसलिए हमारा कॉमरेड बना है। उस कॉमरेड को भी यह समझना होगा कि उसका वह दोषपूर्ण आचरण व हीन मानसिकता उस क्रान्ति के उद्देश्य को ही चौपट कर रही है जिस क्रान्ति के लिए व पार्टी में शामिल हुआ है। उसे यह जरूर समझना चाहिए और दूसरों को भी उसे यह बात समझाने में उसकी मदद करनी चाहिए। उस कॉमरेड को इस तरह सोचना चाहिए कि वह जिस क्रान्ति को संगठित करने के लिए लड़ने को तैयार है, जेल जाने को तैयार है और यहाँ तक कि जान कुर्बान करने के लिए भी तैयार है, जिस क्रान्ति के लिए वह यह सब करने को तैयार है—उसके स्वभाव, संस्कार, पूर्वाग्रहों और आदतों की वजह से उसी पार्टी और क्रान्ति के हितों पर चोट पहुँचती है, उसकी वजह से पार्टी और क्रान्ति के उद्देश्यों को नुकसान पहुँचता है तो वह उन्हें क्यों पाले-पोसेगा और वह अपने आपको सुधारने की कोशिश क्यों नहीं करेगा? उसे यह सोचना-समझना होगा कि अगर उसे पहले जैसा ही निम्न स्तर का रहना था तो वह पार्टी में शामिल ही क्यों हुआ था? पार्टी में शामिल होने के लिए किसी ने उसे मजबूर तो नहीं किया था। पार्टी कोई व्यापारिक ऑफिस तो है नहीं जहाँ नौकरी के लिए दस से पाँच बजे तक ड्यूटी बजानी होगी। यहाँ हम सब वालन्टियर हैं, हम अपने आप स्वेच्छा से पार्टी में शामिल हुए हैं। यहाँ सभी यह बात समझते हैं कि समाज की मुक्ति और यहाँ तक कि उनकी स्वयं की मुक्ति का सवाल भी आज मजदूर वर्ग की मुक्ति के सवाल के साथ ओत प्रोत रूप से जुड़ा हुआ है। यही समझकर वह भी कभी पार्टी में शामिल हुआ था। उसने अपनी खुद की मुक्ति की लड़ाई और मजदूर वर्ग की मुक्ति की लड़ाई को एकाकार कर लिया है या कम से कम ऐसा करने की कोशिश कर रहा है और इसी के लिए वह दूसरी किसी पार्टी में न जाकर इस मजदूर वर्ग की पार्टी में आया है। तब यह सब जानते-मानते हुए वह ऐसा आचरण क्यों करेगा? यह समझकर उस कॉमरेड को अपने आपको सुधारने की कोशिश करनी चाहिए।

मैं कॉमरेडों को फिर बता रहा हूँ कि नेतृत्व के बारे में और पार्टी के हर कामकाज के सम्बन्ध में कॉमरेडों के पास कहने को बहुत कुछ हो सकता है। ऐसी बहुत-सी कमियाँ पार्टी में हैं और यह अस्वाभाविक बात भी नहीं है। हम लोग उन्हें दूर करने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं और करते रहेंगे। लेकिन क्या कोई योजना, प्रोग्राम या कुछ भी ऐसा हो सकता है जो पूर्णतया दोषमुक्त हो? कोई भी मार्क्सवादी इन बातों को इस रूप में नहीं देख सकता। केवल अति-सिद्धान्तबाज (प्रिन्सिपल मोंगर्स) लोग ही ऐसा रुख अपना सकते हैं। जिस तरह कॉमरेडों को पार्टी में किसी दोष को अनदेखा नहीं करना चाहिए, उसी तरह उसे लेकर उन्हें असन्तोष भी नहीं फैलाना चाहिए क्योंकि यह नुकसानदेह है। चूँकि कुछ मतभेद पैदा हो गया है इसीलिए कोई क्यों बड़बड़ाता फिरेगा और असन्तोष का मनोभाव क्यों फैलाएगा? मामला अगर लड़ने लायक है तो उसे ठीक ढंग से लड़ेगा और वह भी एक कॉमरेडशिप की भावना से लड़ेगा, अगर कोई किसी बात को गलत व नाजायज समझ ले, भले ही वह गलती से ऐसा समझ ले, तो उसे निश्चय ही पार्टी-हित की खातिर इस गलत बात के खिलाफ लड़ना चाहिए। उसे समझना होगा कि उस मामले को पार्टी के सामने नहीं रखेगा तो उसे और कहाँ रखेगा और किससे कहेगा।

लेकिन अक्सर कई एक कॉमरेडों के मामले में इसके बिल्कुल उलट ही बात होते देखी जाती है। वे सीधे पार्टी के पास नहीं आते, वे किसी मुश्किल में पड़ने पर या किसी अनुरोध या दबाव के आगे झुककर ही पार्टी के पास आते हैं अथवा औरों से सलाह-मशविरा करने के बाद ही पार्टी के पास आते हैं। पहले वे इसके बारे में दूसरों से कानाफूसी करते हैं, पीठ पीछे खुसर-फुसर करके चटखारे लेते हैं, अपने मन में जो शिकवा-शिकायत या विक्षोभ है उसे दूसरों में फैलाते हैं और संयोगवश उनको अचानक ख्याल आने पर वे पार्टी के पास आते हैं और अपने सवालों पर चर्चा करते हैं; मीमांसा करते हैं। फिर उनमें से अनेक के मामले में यह देखने में आता है कि पार्टी से अपना मतभेद हल न कर पाने पर अन्तत: वे किसी तरह पार्टी की बात मान तो जाते हैं लेकिन सामूहिक फैसले के प्रति अपने आपको खुशी से समर्पित नहीं कर पाते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। हर विषय पर जितनी दूर तक व्यवहारिक है कॉमरेड चर्चा करने को स्वतन्त्र हैं। लेकिन आखिर तक भी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मुंशी प्रेमचन्द जयन्ती सम्मानपूर्वक मनाई गई

लोनी, गाज़ियाबाद (उ.प्र.): महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की जयन्ती के अवसर पर 29 जुलाई को लोनी इण्टर कॉलेज के प्रांगण में ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा एक छात्र सभा की गई। सभा की शुरूआत क्रान्तिकारी गीत एवं छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों से हुई। सभा में अनेक स्कूलों के प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों ने भाग लिया। सभी ने मुंशी प्रेमचन्द की तस्वीर पर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। सभा को छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ की दिल्ली राज्य कमेटी के अध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द, एसयूसीआई(सी) पार्टी के लोनी क्षेत्र के इंचार्ज कॉ. रवीन्द्र चेतन्य, दिल्ली राज्य कमेटी के कोषाध्यक्ष कॉ. मो. आसिफ ने सम्बोधित किया। श्री महेश मार्क (प्रिंसिपल), श्रीमती रमा (प्रिंसिपल), सुबे सिंह (अध्यापक), रुकबा राशि (अध्यापिका) आदि ने अपने व्यक्तिगत सुझाव एवं अनुभव व्यक्त किए। सभा का संचालन कॉ. नितिका ने किया।

जे.पी. नगर (उ.प्र.): भवालपुर के किसान उपकारक इण्टर कॉलेज के प्रांगण में महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की जयन्ती के अवसर पर 31 जुलाई को एक छात्र सभा का आयोजन ऑल इण्डिया डीएसओ की ओर से किया गया। सभा में क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत किये गये। मुंशी प्रेमचन्द की फोटो पर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गये। सभा की अध्यक्षता कॉलेज के प्रबंधक महोदय श्री कृपाल सिंह ने की। सभा में मुख्य वक्ता के रूप एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के कार्यालय सचिव कॉ. प्राण शर्मा के अलावा एसयूसीआई(सी) जे.पी.नगर जिला इकाई की ओर से कॉ. शील कुमार एवं ऑल इण्डिया डीएसओ की जे.पी. नगर की संगठक कॉ. ऋतु चौधरी ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन कॉ. परवेन्द्र सिंह ने किया। इस कार्यक्रम में छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों ने भी शिरकत की।

सागर (म.प्र.): ऑल इण्डिया डीएसओ की जिला समिति के तत्वावधान में 31 जुलाई को महान साहित्यकार मुशी प्रेमचन्द जयन्ती के अवसर पर तिली बाघराज वार्ड स्थानीय कार्यालय में आमसभा आयोजित की गई। सभा की शुरूआत मुंशी प्रेमचन्द को क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि देते हुए की गई। सभा के मुख्य वक्ता एआईडीएसओ की ऑल इण्डिया कमेटी के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. रामअवतार शर्मा ने कहा कि साहित्य का एकमात्र उद्देश्य और आदर्श सामाजिक प्रगति होना चाहिए। डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रेमचन्द साहित्य तत्कालीन समाज का दर्पण है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता एडवोकेट अशोक कुशवाहा ने की। सभा में शिवप्रसाद पटेल, विनोद लोगरिया, रामसिंह कुशवाहा, सोना, अखिलेश, गणेश पटेल आदि ने अपने विचार रखे। सभा का संचालन राजू पटेल द्वारा किया गया। सभा में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने हिस्सा लिया। सभा का समापन क्रान्तिकारी गीतों से किया गया।

शहीद उधम सिंह को याद किया गया

कुरुक्षेत्र: कृषक खेत मजदूर संगठन व डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गनाइजेशन की ओर से जाट धर्मशाला में 31 जुलाई को शहीद उधम सिंह के शहीदी दिवस पर स्मृति सभा का आयोजन किया गया और उन्हें क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता किसान नेता कॉमरेड बाबूराम ने की।

सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी के राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल ने कहा कि शहीद उधम सिंह समझौताहीन, क्रान्तिकारी संघर्ष की धारा के प्रतिनिधि थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवादी शोषण-जुल्म के खिलाफ बहादुरी से लड़ते हुए देश के आजादी आन्दोलन में फांसी का फंदे को हँसते-हँसते गले लगाया था। उन्होंने जिस शोषणमुक्त, भ्रष्टाचारमुक्त समाज की कल्पना की थी, वह आजादी के 65 वर्ष बाद भी पूरी नहीं हो पाई है। उन्होंने बताया कि समाज में बेरोजगारी, महंगाई बढ़ने के साथ ही सांस्कृतिक पतन व नैतिकता का पतन हो रहा है। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ता जा रहा है। नशाखोरी युवा पीढ़ी को खोखला कर रही है। उनके जीवन-संघर्ष से सीख लेकर आज हमें हर तरह का शोषण-जुल्म मिटाने के लिए और जनजीवन की सभी समस्याओं की जड़ इस गली-सड़ी शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था उखाड़ फेंकने के परिपूरक जोरदार जन आन्दोलन गठित करने के लिए आगे आना चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

इस मौके पर कॉ. नरेश कुमार, राजकुमार आदि उपस्थित थे।

शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती सम्मानपूर्वक मनाई गई

आरोन: ऑल इण्डिया डीवाइओ की आरोन इकाई के द्वारा शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती यहाँ विभिन्न वार्डों में सम्मान के साथ मनाई गई जिसमें युवाओं एवं गणमान्य नागरिकों ने आजाद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। डीवाइओ की नगर इकाई के सदस्य गोपाल नायक ने कहा कि आज वर्तमान में शासक वर्ग सही आदर्शों को भुलाने की कोशिश कर रहा है। डीवाईओ के नगर उपाध्यक्ष सोनू शर्मा ने कहा कि आज समाज में तेजी से बढ़ रही अश्लीलता, अपसंस्कृति, नशाखोरी का प्रचलन सरकारों की सोची समझी साजिश के तहत है और एआईडीवाईओ सरकारों के इन मनसूबों का पुरजोर विरोध करता है। डीवाईओ के साथी जितेन्द्र अहीरवार ने कहा कि जनता महंगाई व बेरोजगारी की मार से कराह रही है। डीवाईओ के जिला सचिव सिद्धान्त कुमार ने कहा कि समाज दो वर्गों में बँटा हुआ है जिसमें एक वह वर्ग है जिसे खाने के लिए रोटी, पहनने के लिए कपड़े नहीं है यहाँ तक कि माँ अपने बच्चों को बेचने को मजबूर है और दूसरा वर्ग उन धन कुबेरों का है जिसमें टाटा, बिरला, अम्बानी आते हैं जो सरकारों को कठपुतली की तरह नचाता है। आम आदमी पर थोपी जा रही जनविरोधी नीतियों के खिलाफ एक जोरदार आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है।

दुर्ग (छ.गढ़): शहीद चौक पर एआईडीएसओ जिला इकाई द्वारा चार क्रान्तिकारियों, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह और उधम सिंह की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया गया। सभा को शहीद भगत सिंह स्कूल के संस्थापक प्राचार्य श्री एन के वर्मा, एआईडीवाइओ के छ.गढ़ इंचार्ज कॉ. विश्वजीत हारोडे ने सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आजादी आन्दोलन के क्रान्तिकारियों के जीवन-संघर्षों से प्रेरणा लेकर शोषण मुक्त समाज बनाने के उनके अधूरे सपने पूरा करने के लिए छात्र-छात्राओं को वैज्ञानिक चिन्तनधारा के आधार पर संगठित होकर उन्नत संस्कृति, उन्नत चरित्र निर्माण कर जोरदार छात्र आन्दोलन निर्मित करना होगा।

साइन्स कॉलेज दुर्ग में एआईडीएसओ के द्वारा शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती के मौके पर कॉलेज के गेट के पास हुई स्मृति सभा में कॉ. आत्माराम साहू ने कहा कि हर युग में छात्र-युवाओं ने सामाजिक प्रगति के लिए अपने प्राण न्योछावर किए। इसका जीवन्त उदाहरण महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद है। इन क्रान्तिकारियों के जीवन-संघर्षों से सीख लेकर अन्याय-शोषण के खिलाफ जोरदार छात्र-आन्दोलन निर्मित करना होगा। शहीद भगत सिंह स्कूल में प्रवीण शर्मा के नेतृत्व में स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता व सभा की गई।

राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुर्ग में महान क्रान्तिकारी शहीद चन्द्रशेखर आजाद जयन्ती हेमीन साहू के नेतृत्व में व बहुउद्देश्य विद्यालय में कपिल साहू के नेतृत्व में पूरे सम्मान के साथ मनाई गई।

जेपीए द्वारा सरकारी कर्मचारियों की ज्वलन्त समस्याओं पर परिचर्चा का आयोजन

परिचर्चा को संबोधित करते हुए कॉ. अचिंत्य सिन्हा

सरकारी क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों की यूनियनों/एसोसिाएशनों के एक वृहद संगठन ज्वाइन्ट प्लेटफार्म ऑफ एक्शन (जेपीए) के तत्वावधान में एक सार्थक परिचर्चा का आयोजन 26 जुलाई को कलावती सरन चिल्ड्न हॉस्पीटल नई दिल्ली के लैक्चर हॉल में किया गया। इसमें विभिन्न यूनियनों/एसोसिएशनों के सैकड़ों नेताओं और कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया और सरकारी कर्मचारियों के कुछ प्रस्तावों और ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की।चर्चा के मुख्य मुद्दे थे पब्लिक सर्विस एम्पलाइज़ के लिए रोजगार की एक जैसी शर्तों की खातिर स्पेशल आयोग का गठन करना, जनहित में सरकारी क्षेत्र का विस्तारीकरण तथा सुदृढ़ीकरण करना, ठेकेदारीकरण और रोजगार को ठेके पर देना बन्द करना, निजीकरण और आऊटसोर्सिंग बन्द करना, ठेके पर या ठेकेदारों के माध्यम से विभिन्न प्रोजेक्टों व स्कीमों में नियुक्त कर्मचारियों को नियमित करना तथा केन्द्र व राज्य सरकारी सेवाओं में लाखों खाली पड़े पदों को भरना।

जेपीए के अखिल भारतीय अध्यक्ष कॉमरेड अचिन्त्य सिन्हा ने कर्मचारी नेताओं और कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। इसके अलावा दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉमरेड आर.बी. पाण्डे, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष व स्वास्थ्य कर्मचारियों के नेता कॉमरेड वीएस दहिया ने परिचर्चा में अपनी बात रखी। चर्चा में भाग लेने वालों में कलावती हॉस्पीटल वर्कर्स यूनियन के महासचिव श्री एसएस नेगी, लेडी हॉर्डिंग एण्ड एसके हॉस्पिटल एम्पलाइज़ यूनियन के महासचिव श्री विशम्बर दयाल भी शामिल थे।

केप्टन लक्ष्मी सहगल के निधन पर एआईएमएसएस ने शोक जताया

ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की अखिल भारतीय कमेटी ने 97 वर्षीया केप्टन लक्ष्मी सहगल के निधन पर तहेदिल से गहरा शोक जताया है। उनके निधन से देश ने वास्तव में ही अपनी एक ऐसी वीरांगना सुपुत्री को खो दिया है जो ब्रिटिश शासन से देश की आजादी के लिए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में सशस्त्र हो कर बहादुरी से लड़ी थीं। आजाद हिन्द फौज में झांसी रानी रेजिमेण्ट की केप्टन के रूप में जो हिम्मत, आत्मबलिदान का जज्बा और देश की खातिर जो लगन उनके चरित्र में प्रतिबिम्बित हुई थी वह उदाहरणमूलक थी। हमारा संगठन जो महिलाओं पर होने वाले भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ आन्दोलन में जवान व बुजुर्ग महिलाओं को हजारों की तादाद में शामिल करा रहा है और महिलाओं में साहसी व उच्च चरित्र विकसित कर रहा है, कैप्टन लक्ष्मी को पूरी श्रद्धा के साथ सलाम करता है।

आचरण विधि..

(पृष्ठ 4 का शेष)

अगर वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते हैं और सन्तुष्ट नहीं हो पाते हैं तो उन्हें पार्टी के फैसले के बारे में पूछना चाहिए और इसे जानने के बाद खुशी से मान कर चलने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर चिन्तन के क्षेत्र में कोई व्यक्तिगत पक्ष हावी न हो तो अप्रसन्न होने की कोई बात ही नहीं है।

किसी चर्चा से किसी कॉमरेड के सन्तुष्ट न होने से अपने असन्तोष के मनोभाव को फैलाने से पहले उसे सोचना चाहिए कि अगर वह खुद नेतृत्व के स्थान पर होता तो पार्टी एवं क्रान्ति के समग्र हित में वर्तमान परिस्थिति में उसका फैसला या रवैया क्या होता? अथवा भविष्य में मान लीजिए वह कभी नेता बना और ठीक ऐसी ही परिस्थिति में कोई दूसरा कॉमरेड उनके साथ चर्चा में सन्तुष्ट न हो और अपने चारों ओर अपने असन्तोष के मनोभाव को फैलाता फिरे तो पार्टी की एकता व कार्य-कुशलता को वह कैसे बरकरार रख सकेगा? इसीलिए हम कहते हैं कि हर एक को पार्टी के फैसले को खुशी के साथ मानना चाहिए। कॉमरेडों को एक बात और सदा याद रखनी चाहिए कि कम्युनिस्ट आचरण-विधि के मुताबिक, किसी दूसरे के आचरण की आलोचना या चर्चा करने से पहले अपने को उसकी जगह रख कर विचार करना चाहिए वरना आलोचना का ढंग कभी भी निर्वैयक्तिक (इम्पर्सनल) नहीं हो सकता। इस तरह कॉमरेड इस क्षेत्र में अनुभव अर्जित करेंगे और अगर जरूरी हुआ तो वे फिर संघर्ष करेंगे। संघर्ष उन्हें करना ही होगा, लेकिन संघर्ष सदा खुलेपन से करेंगे।

खुले परिवेश में संघर्ष करने का अर्थ है–पार्टी नेतृत्व से वे कुछ नहीं छुपाएंगे। लेकिन अक्सर हम देखते हैं कि कुछ कॉमरेड पार्टी और नेतृत्व से बहुत-सी बातें गुप्त रखते हैं। लेकिन बहुत से साधारण कॉमरेडों से उनका कुछ भी छुपा हुआ नहीं रहता। जो ऐसा आचरण करते हैं वे अगर अपने मन को जरा टटोल कर देखें यानी अपने अन्दर जरा गहराई से झांक कर देखें तो पाएंगे कि इससे वे खुद भी खुश नहीं हैं, उन्हें खुद भी सकून नहीं है। उनका यह आचरण न केवल पार्टी की एकता को कमजोर करता है बल्कि उस कॉमरेड को भी इससे कुछ नहीं मिलता है। लेकिन पार्टी में एक और तरह की भी आलोचना चलती है जो अच्छे कॉमरेड करते हैं। बहस में पराजित होने के बावजूद, उन्हें काफी आनन्द मिलता है, गहन संतोष मिलता है क्योंकि वे तो सच्चाई के लिए ही लड़ रहे हैं। समझ लेना चाहिए कि पार्टी के आगे खुशी-खुशी समर्पण करने में अपमान नहीं होता। बहस में हारने से कोई छोटा नही हो जाता है और उसकी मर्यादा-हानि नहीं हो जाती है।

राजनीति या आन्दोलन में आम तौर पर ऐसे बहुत लोग मिलते हैं जो हमेशा असन्तुष्ट रहते हैं; हमेशा अपना असन्तोष प्रकट करते रहते हैं। उनकी जितनी उम्र बढ़ती जाती है, तजुर्बा बढ़ता जाता है उसके साथ-साथ उनका अहंबोध (इगो) भी बढ़ता जाता है, क्योंकि चाहे कितनी भी लड़ाइयाँ उन्होंने लड़ी हों, कितना भी तर्जुबा उन्होंने प्राप्त किया हो, लेकिन वे अपनी व्यक्ति-सत्ता को पार्टी के साथ एकात्म करने के संघर्ष से बचते रहे। पार्टी के साथ एकात्म होने के संघर्ष में वे कहाँ खड़े हैं–यह प्रश्न उन्होंने कभी अपने आपसे नहीं किया और उनके बारे में पार्टी के अन्य कॉमरेड क्या धारण बनाए हुए हैं–इसको जांचने की भी उन्होंने कभी कोशिश नहीं की। दूसरे लोग क्या कहते हैं–इस पर ध्यान न देकर वे अपने मनमाने ढंग से काम करते रहे, असन्तोष फैलाते रहे, खुसर-फुसर करते रहे और अपने अन्दर इन तमाम गन्दी चीजों व कुप्रवृत्तियों को पनपाते रहे। इसका नतीजा क्या हुआ? तीस वर्ष से अगर कोई आन्दोलन या राजनीति में है तो इससे वह घिस-घिस कर कई बातें सीख जाता है, अनेक सिद्धान्त (थ्यूरीज़) उसे जबानी याद हो जाते हैं, कुछ लफ्फाजी करना सीख जाता है और इससे उसके दिमाग में फितूर पैदा हो जाता है कि वह तो बहुत बड़ा 'विद्वान' हो गया है। अत: उनके अन्दर अनिवार्य तौर पर अहं-बोध अत्यधिक बढ़ जाता है। यह ठीक है कि उसने तीस साल के राजनीतिक जीवन व आन्दोलन से जो अनुभव प्राप्त किया है उससे आम कॉमरेडों को बहुत-सी बातें सीखने को हैं। फिर भी आम कॉमरेडों में, जिन्होंने उससे भी कुछ जानना-सीखना है, उनमें जो गुण हैं उन गुणों का इस अनुभवी कॉमरेड में पूरा अभाव है। बहुत से आम कॉमरेडों ने मूल बात यानी पार्टी को समझ लिया है; पार्टी और वर्ग के साथ एकात्म होने की धारणा को समझ लिया है, जिसे वह तीस सालों का तजुर्बेकार कॉमरेड नहीं समझ पाया। आम कार्यकर्ता लम्बा तजुर्बा न होने पर भी यह बात सहज ढंग से समझ गए हैं कि अगर पार्टी के साथ अपने आपको एकात्म करने के संघर्ष को छोड़ दिया जाए तो वर्ग के साथ खुद के एकात्म होने का कोई मायने नहीं है। लेकिन इस बात को इस तजुर्बेकार कॉमरेड ने नहीं समझा।

कॉमरेडों को यह बात हमेशा याद रखनी होगी कि पार्टी और वर्ग के साथ एकात्म होने के इस संघर्ष को छोड़ देने से ही अहं-बोध का जन्म होता है एवं यही अहं-बोध आगे चलकर अनेक समस्याओं को जन्म देता है। कोई अगर अहं-बोध का शिकार हो जाए और अपने मन को इससे मुक्त न कर सके तो वह कभी भी यह समझने में सक्षम नहीं हो सकता कि संघर्ष व आन्दोलन के उसके लम्बे अनुभव के बावजूद उसकी इतनी ज्यादा आलोचना क्यों होती है? हो सकता है पार्टी उसकी योग्यता एवं गुण आदि सब कुछ को मान्यता देने के बावजूद, उसको बड़ी सांगठनिक जिम्मेदारी नहीं सौंपना चाहती यानी पदाधिकारी नहीं बनाना चाहती क्योंकि ऐसा अधिकार देने से पार्टी बड़े भारी खतरे को न्यौता देगी। ऐसे कॉमरेडों को यह अथोरिटी देने में पार्टी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए–ऊपर से देखने में तो लगता है इससे पार्टी का क्या जाता है? लेकिन असली खतरा इस अन्देशे में निहित है जिसे कोई भी सच्चा वर्ग -सचेत कॉमरेड नजरअन्दाज नहीं कर सकता कि व्यक्तिवाद के रुझान को लेकर चलने वाले कॉमरेड को यह अथोरिटी देने से वह न केवल इस शक्ति को व्यक्तिगत स्वार्थ में दुरुपयोग कर सकता है बल्कि खुदगर्जी की भावना-धारणा के वशीभूत होकर पार्टी के सिद्धान्त-तत्वों को भी विकृत कर सकता है और पार्टी की वैचारिक-सैद्धान्तिक समझदारी को ही गड़बड़ करने का औजार बन सकता है जैसे कि ट्रॉटस्की बन गया था। हालांकि ट्रॉटस्की जैसे महापण्डित को भी आखिरकार इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया गया। कुछ समय के लिए वह मुट्ठी भर लोगों को भले ही गुमराह करने में सफल हुआ परन्तु इस तरह खुद को ही ज्यादा नुकसान पहुँचाया। लेकिन इतनी बड़ी क्षमता होने पर भी ट्रॉट्स्की क्रान्ति के ज्वार को रोक नहीं सका था। क्रान्ति के ज्वार को रोक पाना सम्भव भी नहीं है। क्रान्ति को कोई नहीं रोक सकता। यह सम्भव ही नहीं है। महज बाधाओं और विरोध के द्वारा ही क्रान्ति की प्रक्रिया को अगर रोका जा सकता तो बुर्जुआ के द्वारा ही नहीं बल्कि तथाकथित कम्युनिस्टों के द्वारा भी चारों तरफ से हमारे खिलाफ लगातार विरोध व बाधाओं की बौछार हो रही है। हमारे खिलाफ निन्दा अभियान चलाकर, झूठी कहानियाँ गढ़कर, झूठा प्रचार और कुत्सा फैलाकर, क्या कोई हमें आगे बढ़ने से रोक सका है? ऐसे तो रोका ही नहीं जा सकता है।

इस आचरण विधि के पालन-सम्बन्धी एक और पहलू को भी हमें ध्यान में रखना होगा। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि हम लोग उन सब मुद्दों पर आपस में आलोचना या चर्चा-बहस कर सकते हैं लेकिन ऐसी कोई आलोचना या चर्चा नहीं कर सकते हैं जो नेताओं के सामने न कर सकें। अगर किसी का हास्य-व्यंग्य के जरिये ही बात करने का लहजा या ढंग है तो जिस ढंग से आपस में कुछ कॉमरेड बात करते हैं उसी ढंग से वे नेताओं के सामने भी बात करेंगे। जो बात औरों के सामने तो खिल्ली उड़ाने वाले लहजे में करते हैं लेकिन नेताओं के सामने उसी बात को फिर क्यों सिद्धान्त का मुलम्मा पहनाकर वे बड़ी गम्भीरता से रखते हैं? मुझे ही ले लीजिए–मैं स्वयं क्या करता हूँ?

कई बार ऐसा होता है कि बहुत कॉमरेडों के बीच भरे हॉल में ही मैं नेताओं की आलोचना करता हूँ, खुले मन से करता हूँ, वे नेता भी उसे सुनते हैं। यहाँ तक कि जरूरत पड़ने पर कभी किसी नेता को मैं झिड़क भी देता हूँ। इसका मायने हैं कि मैं जो सोचता हूँ उसे मैं पीठ पीछे कानाफूसी करके नहीं कहता, मैं खुलेआम चर्चा-आलोचना करता हूँ और खुले मन से करता हूँ। यह आलोचना मैं खुद उस नेता को अलग ले जाकर भी करता हूँ और सब की मौजूदगी में भी, इकट्ठे सब कॉमरेडों के सामने भी करता हूँ।

इसके दो लाभ हैं। पहला यह कि अगर मेरी समझदारी में कहीं कोई गलती है तो उसे सुधारा जा सकता है क्योंकि मैं सबके सामने कह रहा हूँ। इसलिए अगर मेरी कोई गलती होगी तो वह पकड़ी जाएगी। दूसरा लाभ यह है कि इस किस्म की आलोचना सभी के सामने होने से अगर किसी अन्य कॉमरेड में भी ऐसी ही कमी-नुक्स है तो वह भी दूर हो सकती है। फिर ऐसा भी होता है कि किसी-किसी कॉमरेड के बारे में कोई-कोई बात दूसरे कॉमरेडों से नहीं कही जा सकती है। इसका यह कारण नहीं है कि मैंने अपने व्यक्तिगत ख्याल या मर्जी के मुताबिक ऐसा किया–बात ऐसी नहीं है। वही बात हमने तमाम उपयुक्त पार्टी कमेटियों के सामने रखी है। इसलिए कुछ कॉमरेडों से न कहने पर भी वह बात पार्टी से छुपी हुई नहीं रही। इसी को हम कहते हैं पार्टी का अन्दरूनी स्वस्थ माहौल।

पार्टी के साथ कॉमरेडों के एकात्म होने के संघर्ष को चलाने के लिए इस किस्म का माहौल बना रहना बहुत जरूरी है। पार्टी के साथ कॉमरेडों के एकात्म होने का यह संघर्ष सर्वोच्च महत्व का है क्योंकि अगर पार्टी के साथ एकात्म होने का यह संघर्ष नहीं रहा तो पार्टी की मूल राजनीतिक लाइन सही होते हुए भी बेमतलब के अन्दरूनी झगड़ों और आपसी रंजिश की वजह से पार्टी की एकता के अभाव में क्रान्ति ही मार खा सकती है और अगर किसी तरह पार्टी की मूल राजनीतिक लाइन को इस मार से बचाकर क्रान्ति सफल कर भी ली जाए तो क्रान्ति के बाद ये सब समस्याएं और भी नग्न रूप में उभर कर आनी लाजमी हैं और इस तरह होने पर आखिरकार क्रान्ति को भी बचाया नहीं जा सकता है। इसीलिए मैं फिर जोर देकर कहता हूँ कि एकात्म होने के लिए यह संघर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए खुले और मुक्त परिवेश में आलोचना-चर्चा चलाने का संघर्ष सदा जारी रहना चाहिए।

इस प्रसंग में एक बात और याद रखनी होगी कि किसी समय किसी खास सवाल पर पार्टी का मत गलत हो सकता है। तब उसे सुधारने का रास्ता क्या है और उसमें कॉमरेडों की भूमिका क्या होनी चाहिए? निश्चय ही कॉमरेड उस गलती को सुधारने के लिए उपयुक्त कदम उठाएंगे क्योंकि उनका यह काम नहीं है कि एकमात्र वे गलतियाँ पकड़ कर अपनी बहादुरी बघारते फिरें या कोई गलती हुई है–इस बात को लेकर मन मसोस कर बैठ जाएं या गलती को लेकर असंतोष या विक्षोभ जाहिर करने लगें और यहाँ-वहाँ फैलाने लगें। गलती सुधारना सभी कॉमरेडों के लिए इसीलिए जरूरी है कि इस गलती से पार्टी को नुकसान न हो। गलती कहाँ हुई और क्यों हुई–इसका पता लगाने का पार्टी में सही वैज्ञानिक तरीका सदा चालू न रखने से चिन्तन में एकरूपता, दृष्टिकोण में अभिन्नता और चिन्तन की एक-सी प्रक्रिया के विकसित होने के रास्ते में रुकावट खड़ी हो जाती है। इसीलिए इस प्रक्रिया को लागू करने के इस संघर्ष से कोई कॉमरेड या नेता कन्नी नहीं काट सकता क्योंकि यह संघर्ष ही है जो साबित करेगा कि पार्टी समूचे तौर पर गलत थी या किसी कॉमरेड-विशेष की धारणा गलत थी। केवल इसी रास्ते पर चलते हुए ही व्यक्ति और समष्ठि के बीच मत की एकता स्थापित होगी, सामूहिकता पैदा होगी। इस तरह वैचारिक संघर्ष के द्वारा चिन्तन की एकता हासिल करने की यह निरन्तर प्रक्रिया ही सोच में एकरूपता, दृष्टिकोण में अभिन्नता और प्रचार की एक-सी शैली को विकसित करने की एकमात्र गारण्टी है।

(शेष अगले अंक में)

भूमि अधिग्रहण के खिलाफ हरियाणा में जन-प्रतिवाद

हरियाणा राज्य के रिवाड़ी जिले में बावल सब डिविजन के 16 गाँवों के किसान अपनी 3500 एकड़ उपजाऊ कृषि भूमि को बचाने के लिए संघर्ष की राह पर हैं। 22 जुलाई को आसलवास गाँव में बुलाई गई किसान महा-पंचायत में रिवाड़ी जिले के लगभग 5000 किसानों ने हिस्सा लिया। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी के जिला कमेटी सचिव कॉमरेड राजेन्द्र सिंह ने इस महा-पंचायत के कार्यक्रम का संचालन किया। विपक्षी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं, एआईकेकेएमएस तथा बीकेयू सहित किसान संघर्ष समितियों के प्रतिनिधियों ने संघर्षरत किसानों को सम्बोधित किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक प्रमुख किसान नेता राकेश टिकैत भी उनमें मौजूद थे। डेढ़ बजे तक हरियाणा सरकार या जिला प्रशासन का कोई प्रतिनिधि किसानों की बात सुनने के लिए वहाँ नहीं गया। अंतत: किसानों ने ऐलान किया कि गाँव के साथ से गुजरने वाले दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग न. 8 को दो घण्टे के लिए जाम किया जाएगा। जब लोगों ने सड़क की तरफ कूच किया तो पहले से तैनात पुलिस ने बिना किसी पूर्व चेतावनी दिए आँसू गैस के गोले छोड़े, गोलियों की बौछार की और लाठीचार्ज शुरू कर दिया। दो किसान गोली लगने से गम्भीर रूप से घायल हो गए, सैकड़ों अन्य घायल हुए और प्रेस-मीडिया के कैमरे तोड़ दिए गए। इस हमले के बावजूद किसानों ने दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमर्ग न. 8 कई घण्टे तक जाम कर दिया। किसानों पर दोबारा फिर हमला बोलने के लिए सूर्यास्त के बाद सशस्त्र पुलिस बल बढ़ा दिया गया। किसानों पर झूठे मुकदमे बना दिये गये।

यह मौजूदा आन्दोलन तब शुरू हुआ जब जिला प्रशासन ने भूमि अधिग्रहण के लिए प्रस्तावित साइट पर बने अनेक घरों को तोड़ दिया। इसके खिलाफ चेतावनी देने के लिए 20 जून को एक स्थानीय किसान पंचायत बुलाई गई थी। एआईकेकेएमएस ने किसानों का समर्थन किया था। किसानों ने भूमि अधिग्रहण न करने की फरियाद की लेकिन प्रशासन ने कोई बात नहीं सुनी। इसके अलावा जिन्होंने अपने घरों को तोड़े जाने का विरोध किया था उनके खिलाफ केस दर्ज किए। इसके खिलाफ किसानों द्वारा डीसी आफिस रिवाड़ी के सामने एक धरना गत 11 जुलाई को दिया गया। फिर 16 जुलाई को जब किसानों ने उपायुक्त को अपना ज्ञापन सौंपना चाहा तो आफिस के बाहर पुलिस द्वारा उन पर लाठीचार्ज किया गया और बिना किसी उकसावे के पुलिस द्वारा दफ्तर की तीसरी मंजिल से पत्थर और अन्य चीजें प्रदर्शनकारियों पर फेंकी गई। वयोवृद्ध महिलाओं और एक वयोवृद्ध सेवानिवृत कर्नल सहित बहुत से किसान इसमें जख्मी हुए। पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय हत्या के प्रयास का एक केस किसानों के ही खिलाफ दर्ज कर दिया गया। जिला मुख्यालय के आसपास धारा 144 लगा दी गई। किसानों पर हुए इस अन्याय के विरोध में जिला अदालत बार एसोसिएशन ने एक दिन काम बन्द रखा। 18 जुलाई को रिवाड़ी और बावल कस्बों में संघर्षरत किसानों के आह्वान पर पूर्ण बंध रखा गया। एसयूसीआई(सी) और एआईकेकेएमएस ने इसमें अगुआ भूमिका निभाई। 22 जुलाई को किसान महा-पंचायत बुलाने के एलान के साथ धरने का समापन हुआ। किसान महा-पंचायत के दिन 22 जुलाई को किसानों पर यह बर्बर पुलिस जुल्म हुआ। किसानों पर हुए इस पुलिसिया दमन और 16 गाँवों की भूमि के जबरन अधिग्रहण के खिलाफ में 24 जुलाई को समस्त हरियाणा प्रतिवाद दिवस मनाया गया।

हरियाणा में उपजाऊ कृषि भूमि के जबरन अधिग्रहण के खिलाफ फतेहाबाद जिले में पिछले दो साल से किसान संघर्षरत हैं। जैसे ही सरकार ने अधिग्रहण का फाइनल अवार्ड देने के लिए कदम उठाया वैसे ही महिलाओं सहित किसानों ने एक बड़े संघर्ष के लिए कमर कस ली, जरूरत पड़े तो हाथों में लाठियाँ लेकर भी उन्होंने लड़ने की भी ठान ली। आन्दोलन के एक भागीदार ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) ने भूमि के नाजायज अधिग्रहण की योजनाओं को रद्द करने की माँग करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन भेजा है।

रिवाड़ी में आन्दोलनकारी किसानों पर पुलिस बर्बरता का एक मंजर (साभार दैनिक ट्रिब्यन)

कॉमरेड राकेश कुमार लाल सलाम

जौनपुर (उ.प्र.): सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) जौनपुर जिले की तियरा लोकल कमेटी के सदस्य कॉ. राकेश कुमार का निधन 17 जुलाई 2012, सुबह 6 बजे बिजली के करेन्ट छू जाने से हो गया। कॉमरेड राकेश 36 वर्ष के थे इनका जन्म पार्टी परिवार में हुआ था। जन्म पार्टी परिवार में होने के कारण पार्टी की समझदारी को हासिल करने में इनको बहुत देर नहीं लगी। ये छात्र जीवन से ही अपने पिताजी के निर्देश में छात्र संगठन एआईडीएसओ में जुड़ गए। इनकी इमानदारी और संगठन के प्रति लगनशीलता को देख संगठन के नेताओं ने इनको डीएसओ जिला कमेटी जौनपुर में कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दे दी जिसको ईमानदारी से सफलतापूर्वक निर्वाह किया। ये डीएसओ उ.प्र. राज्य कमेटी के सदस्य भी चुने गए। कॉमरेड राकेश को पार्टी या जनसंगठन की जो भी जिम्मेदारी सीनियर साथियों द्वारा दी जाती थी उसको लेने से कभी इन्कार नहीं किया। 2004 में युवा संगठन एआईडीवाईओ जौनपुर जिला संयोजन समिति के सदस्य के रूप में भी चुने गए। आर्थिक समस्याओं के कारण उनको एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी करनी पड़ी। इसके बावजूद पार्टी के आन्दोलनात्मक कार्यवाहियों में भाग ले रहे थे। पार्टी को रेगुलर चन्दा भी देते थे।

किसी भी काम के प्रति ईमानदार, लगनशील और साहसी नौजवान के रूप में परिचित थे। नौकरी छोड़कर फिर से पार्टी के कामों में सक्रिय भूमिका अदा करने का मन बनाए हुए थे। इनके पीछे इनकी पत्नी, पुत्र, दो पुत्रियाँ व उनका भरा पूरा परिवार है। परिवार के सभी लोग पार्टी के हमदर्द व समर्थक हैं।

20 जुलाई को इनके गाँव मल्लूपुर प्राईमरी पाठशाला के प्रांगण में पार्टी जिला कमेटी की ओर से शोक सभा का आयोजन किया गया। इसमें एसयूसीआई(सी) के राज्य सचिव कॉ. वी.एन. सिंह ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि कॉमरेड राकेश ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठ और साहस के साथ पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति सफल करने के लिए पार्टी के नजदीक आए थे। पार्टी चिन्तन को अपने जीवन में भी लागू करने की कोशिश कर रहे थे। जिस अधूरे काम को छोड़कर चले गए हैं उसको पूरा करने की जिम्मेदारी हम सभी के कन्धे पर है। इस शोक सभा के अवसर पर जौनपुर जिला सचिव कॉ. जगदीश चन्द्र अस्थाना, सुल्तानपुर जिला सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा, एआईडीएसओ के पूर्व राज्य अध्यक्ष कॉ. पुष्पेन्द्र विश्वकर्मा, कॉ. रवि किशोर मौर्य, एआईडीवाईओ के राज्य सचिव कॉ. हरिकिशोर मौर्य, एआईडीएसओ के राज्य सचिव कॉ. हरि शंकर आदि के अलावा जिले के विभिन्न क्षेत्रों से सैकड़ों लोग उपस्थित थे। शोक सभा का संचालन कॉ. सुरेन्द्र नाथ मौर्य ने किया तथा अध्यक्षता कॉ. छोटेलाल मौर्य ने की। शोक सभा में राकेश के पिता जयराम मौर्य व उनके परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे।

असम में ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

गठबंन्धन सरकार के बेपरवाह रवैये की और अचानक भड़के साम्प्रदायिक उपद्रव को शान्त करने में उसके पूरी तरह नाकाम रहने की कड़ी निन्दा की। उन्होंने इस साम्प्रदायिक खून-खराबे को रोकने के लिए प्रभावित इलाकों में तुरन्त सेना तैनात करने और पूरी सख्ती के साथ हालात से निपटने की माँग की। इस जघन्य अपराध को अंजाम देने वालों और उकसावेबाजों को सख्त सजा देने की माँग के अलावा उन्होंने मृतकों व घायलों के परिवारों को उचित मुआवजा देने, बेघर हुए लोगों के पुनर्वास के साथ-साथ उनके वापस लौटने के लिए सौहार्दपूर्ण परिवेश तैयार करने और निर्दोष पीड़ित जनों की जान-माल की सुरक्षा की गारण्टी करने की भी सरकार से माँग की।

छात्र आन्दोलन के दबाव से झुका प्रशासन

प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश की अंतिम तिथि 20 जुलाई की व 10% सीटें बढ़ीं

गुना (म.प्र.) : उच्च शिक्षा में प्रवेश न मिल पाने व सीट न बढ़ाए जाने के खिलाफ छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा 17 जुलाई को कॉलेज परिसर में पुतला दहन कर विरोध प्रदर्शन किया था। इसके परिणामस्वरूप आज उच्च शिक्षा विभाग ने प्रवेश की तिथि 20 जुलाई कर दी व सीटों में 10% की वृद्धि भी कर दी। अब वे छात्र भी प्रवेश ले पाएंगे जो सीटों के अभाव में प्रवेश से वंचित हो गए थे। डीएसओ के कॉलेज कमेटी अध्यक्ष अजीत सिंह पंवार ने इसे छात्र आन्दोलन की जीत बताते हुए छात्रों से फीस वृद्धि, ऑन लाइन सिस्टम, सेमेस्टर प्रणाली के खिलाफ आन्दोलन संगठित करने की अपील की है।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing : 5 August, 2012

महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के विरुद्ध प्रदर्शन

भोपाल: देशभर में बढ़ रही महिलाओं से छेड़छाड़ की घटनाओं के विरोध में 16 जुलाई को भोपाल के स्थानीय जिन्सी चौराहे पर एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ और एआईडीएसओ ने मिलकर प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन में एआईएमएसएस की भोपाल जिला सचिव कॉ. जोली सरकार ने कहा कि आज गुवाहाटी और विलासपुर के साथ-साथ पूरे देश भर में महिलाओं पर जो अत्याचार बढ़ रहे हैं। उसका कारण यह है भूमण्डलीकरण के चलते आज महिलाओं को उपभोग की वस्तु समझा जाता है। प्रदर्शन के बाद हुई सभा में एआईडीएसओ के जिला अध्यक्ष कॉ. विनोद लोगरिया, एआईडीवाईओ के संयोजक कॉ. मंजीत पटेल व सदस्य अजय श्रीवास्तव ने भी अपनी बात रखी। सभा का संचालन एआईडीएसओ के सदस्य कॉ. कंचना खात्रीकर ने किया।

एसयूसीआई (सी) का लोगों से आह्वान

ईंधन सरचार्ज के अनुदान कम्पोनेन्ट को वापस लेने के चलते विभिन्न राज्यों में पैट्रोल-डीज़ल के दामों में भारी वृद्धि और ईन्धन तेल के घरेलू दामों को नियन्त्रण मुक्त करने के लिए उठाए जा रहे कदम को रोकने के लिए आन्दोलन का दबाव पैदा करें

एसयूसीआई(सी) महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 26 जुलाई को निम्नलिखित बयान प्रेस को जारी किया:

कांग्रेस-नीत केन्द्रीय सरकार द्वारा उठाए गए घोर अन्यायपूर्ण और नितांत जनविरोधी कदम का हम जोरदार विरोध करते हैं जिसमें स्टेट सरचार्ज के तहत टैक्सेशन के लिए भरपाई के रूप में तेल कम्पनियों को अब तक दिए जाने वाले अनुदान को वापस ले लिया गया है, परिणामस्वरूप अनेक राज्यों में पैट्रोल-डीज़ल के दामों में भारी वृद्धि हुई है जबकि बाकी राज्यों में भी जल्द ही इसे लागू किया जाएगा। इसके साथ ही सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी और रुपये के गिरते मूल्य के रिवाजी बहाने के अलावा ईंधन तेल की घरेलू दरों में नियमित बढ़ोतरी के लिए अन्य एक बहाना खोज लिया है और खुदरा ईंधन तेल की दरों को पूरी तरह सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने की ओर एक कदम और बढ़ा दिया है जिसके चलते बढ़ती जा रही कीमतें और भी बढ़ेंगी तथा लोगों के जीवन में और भी ज्यादा तबाही लाएंगी। साफ जाहिर है कि यह सरकार तेल शार्कों के अधिकतम मुनाफे को बरकरार रखने के लिए प्रतिबद्ध है। ये तेल कम्पनियाँ गला फाड़कर उस घाटे की भरपाई के लिए चिल्ला रही हैं जिसे 'अण्डर रिकवरी' या शोधित तेल की अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू कीमतों के बीच फर्क कहा जाता है। यह तेजी से कंगाल होते जा रहे आम आदमी की बढ़ती गरीबी और बदहाली के प्रति सरकार की क्रूर उदासीनता को ही दर्शाता है।

हम लोगों से आह्वान करते हैं कि वे अपने जीवन और आजीविका पर होने वाले इस कठोर हमले को हरगिज़ मंज़ूर न करें जिसे लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए ''इकॉनोमिक लॉजिक'' के रूप में पेश किया जा रहा है, वे कपटपूर्ण नारों से भ्रमित न हों और बुर्जुआ वर्ग स्वार्थ की सेवादार ताकतों के दिखावटी विरोध के झांसे में न आएं। हम लोगों से आग्रह करते हैं कि वे सही नेतृत्व के तहत संगठित दीर्घस्थाई सचेत जनवादी आन्दोलन के रास्ते पर आगे बढ़ें। बुर्जआ सरकार की ऐसी साज़िश को रोकने और उन पर पूँजीपतियों द्वारा किए जा रहे हमले को रोकने का एकमात्र रास्ता यही है।

मारूति सुजुकी कारखाने में संघर्ष के असली कारण को उजागर किया जाए– एआईयूटीयूसी

हरियाणा के मानेसर में मारूति-सुजुकी कारखाने में मजदूरों के असन्तोष को लेकर 18 जुलाई को हुए संघर्ष की घटना के परिप्रेक्ष्य में एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने 21 जुलाई को जारी एक प्रैस बयान में कहा कि ''मानेसर के इस कारखाने की घटना का सूत्रपात एक अनुसूचित जाति के श्रमिक के साथ उसकी जाति-सूचक अपशब्द को लेकर कारखाना मैनेजमेण्ट के एक अधिकारी की आपत्तिजनक टिप्पणी को केन्द्र करके हुआ। इस टिप्पणी के प्रतिवाद में मजदूरों ने आवाज उठाई और माँग की कि अनुसूचित जाति के इस मजदूर के प्रति कटूक्ति के लिए मैनेजमैण्ट के उस अधिकारी को माफी मांगते हुए यह मानना पड़ेगा कि अन्याय हुआ है। मजदूरों की इस अत्यन्त जायज मांग को किसी तरह की तवज्जो देना तो दूर की बात रही, प्रबंधन की तरफ से उस मजदूर को ही सस्पैण्ड कर दिया गया। स्वाभाविक था कि इस घटना से मजदूरों में रोष फैल गया। विक्षुब्ध मजदूरों पर प्रबन्धन की मदद से भाड़े के गुण्डे टूट पड़ने से हालात और भी खराब हो गए, जिसने बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ और मारामारी का रूप ले लिया। जो घायल होकर हस्पताल में भर्ती हुए उनमें मजदूर ही ज्यादा थे। खबर है कि अचानक शॉर्ट सर्किट हो जाने से उसी समय कारखाने के दफ्तर में आग लग गई। प्रबंधन की तरफ से आरोप लगाया गया है कि मजदूरों ने कारखाने में प्रवेश करने और बाहर निकलने का रास्ता जाम कर दिया गया जो कि सरासर झूठ है। इस घटना में एक जनरल मैनेजर की हुई मौत अवश्य ही अफसोसनाक है, लेकिन आग लगने के कारण हुई मौत के लिए मजदूरों को दोषी ठहराने की कोशिश सोची समझी चाल है और हम प्रबंधन की इस घिनौनी करतूत की कड़ी निन्दा करते हैं।

उपरोक्त घटना के बाद ही मानेसर प्लाण्ट के साथ लगते इलाके में व्यापक पुलिस आतंक शुरू हो गया। इसके फलस्वरूप न केवल मजदूर बल्कि आम आदमी भी घरों से पलायन कर गए। आस-पास के गाँवों में लोग आतंक के साये में जी रहे हैं। इस दौरान सौ से ज्यादा मजदूर गिरफ्तार किए गए हैं। प्रबन्धन की तरफ से कारखाने में की गई तालाबन्दी ने मजदूरों पर हमले की मात्रा को बढ़ा दिया है।

ऐसे में एआईयूटीयूसी माँग करती है कि कारखाने के अन्दर भाड़े की गुण्डावाहिनी के हिंसक हमले की निष्पक्ष जाँच की जाए, झूठे मुकदमों में फंसाए गए मजदूरों को तुरन्त रिहा किया जाए, सस्पेन्शन और तालाबन्दी वापस ली जाए, सभी मजदूरों को काम पर बहाल किया जाए और कारखाने में काम का माहौल सुनिश्चित करने के लक्ष्य से मालिक-मजदूर दोनों पक्ष मिलकर सौहार्दपूर्ण बातचीत की पहल करें। निष्पक्ष जाँच के जरिए असली घटना को उजागर किया जाए। केन्द्र व हरियाणा सरकार से हमारी यह भी माँग है कि वह मजदूरों को अपराधी ठहराते जाने का जाना-पहचाना रास्ता छोड़कर घटना की तह में जाकर सच-झूठ का पता लगाने के लिए तत्पर हो।

पास-फेल प्रथा के खात्मे, दाखिले में भ्रष्टाचार व स्कूलों में मौलिक सुविधाओं की कमी के खिलाफ प्रदर्शन

दिल्ली : 31 जुलाई को ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गनाइजेशन की दिल्ली राज्य कमेटी के तत्वावधान में दिल्ली सचिवालय पर एक विरोध प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन 8वीं कक्षा तक पास-फेल पद्धति के खात्मे, दाखिला प्रक्रिया में व्याप्त भ्रष्टाचार, ग्रेडिंग प्रणाली, स्कूलों में मौलिक सुविधाओं की कमी आदि सरकार की शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ आयोजित किया गया।

दिल्ली के विभिन्न स्कूलों से आए छात्र-छात्राएँ आईटीओ चौक पर इकट्ठे हुए और सरकार की शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ जमकर विरोध जताया। प्रदर्शन वहाँ सभा में बदल गया। सभा को एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य कमेटी के अध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द, कमेटी के कोषाध्यक्ष कॉ. मो. आसिफ एवं विभिन्न स्कूलों के छात्र प्रतिनिधियों ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन दिल्ली राज्य कमेटी के काउन्सिल सदस्य कॉ. मौ. आरीफ ने किया। छात्रों को एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. प्रताप सामल ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। इसी दौरान दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को एक ज्ञापन भी सौंपा गया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया(कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग. नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com